प्राचीन भारतीय शासन प्रणाली में सम्राट खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख का योगदान

अयोध्या राम

डॉ० अरविन्द कुमार

प्राचीनता की दृष्टि से सम्राट खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख स्थानीय राजवंश का प्राचीनतम् महत्त्वपूर्ण अभिलेख है तथा सम्राट् अशोक के बाद का है। मौर्येतर युगीन अभिलेखों में खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख का विशेष महत्त्व है। यह अभिलेख अपने ढंग का अनूठा है। इसमें कलिंग (उड़ीसा) के राजा खारवेल के शासनकाल के प्रथम तेरह वर्षों की घटनाओं का वर्णन है। यह उड़ीसा के पुरी जिले के भुवनेश्वर मन्दिर से तीन मील पश्चिम की ओर स्थित उदगिरि–खण्डगिरि नाम की पहाड़ियों से बनी प्राचीन जैन गुफाओं मे से एक है, जो हाथीगुम्फा अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें सत्रह पंक्तियाँ है जो करीब चौरासी वर्गफुट क्षेत्रफल में लिखी गयी है। इसके अक्षर काफी बड़े हैं और गहरे खुदे गये हैं, परन्तु काल–कारण से यह लेख इतना क्षतिग्रस्त है कि इसका पाठोद्वारा समुचित रूप से कर सकना किसी के लिए सम्भव नहीं हो सका है। यह अभिलेख, प्राचीन शौरसेनी प्राकृत–भाषा और ब्राह्मी–लिपि में उत्कीर्ण है। इसके काल के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद है। कुछ लोग इसे ईसा पूर्व की दूसरी शती के मध्य रखते है और इसे कुछ काफी पीछे का मानते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग इसके काल की सीमा ई०पू० पहली शती अथवा पहली शती का आरम्भ अनुमान करते है। अतः खारवेल का समय, शिलालेख के आधार पर और अधिकांश विद्वानों की सम्पति को ध्यान में रखते हुए पहली शती ई०पू० में ही ठहराया जा सकता है। खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख से ज्ञात होता है कि खारवेल चेदिवंश के थे और कलिंग राजवंश की तीसरी पीढ़ी में हुए थे। इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि खारवेल को जैन धर्म के प्रति आस्था थी।